पत्थर

राह में पड़ा था मैं किसी ने ठोकर लगाई,

नींव में गिरा मैं आधार नींव का बन गया।

मन्दिर में गया तो श्रद्धा से पूजा गया,

हाथ में आया जो मूर्तिकार के,

सुन्दर मूर्ति रुप में मेरा पुर्नजन्म हुआ।

हाथ में आया जो हृदयहीन मानव के,

अपनों को ही घायल कर गया।

पत्थर हूं मैं मुझ में दिल नहीं, समझ नहीं - कहते हैं लोग,

फिर भी मैं काम कैसे कैसे कर गया।

उनसे तो अच्छा हूं मैं जिनमें हृदय भी है और समझ भी,

फिर भी काम किसी के न आ सके।

अंजु चौधरी, शोध सहायक